विवाह प्रक्रिया में बदलाव लाकर पारिवारिक संरचना को मजबूत करना

-शांतिलाल मुथ्था

तेजी से बदलते इस समय में विवाह संस्था के अस्तित्व को लेकर कई आशंकाएं उठ रही है | विवाह तय करने की प्रक्रिया में बदलाव आज के समय की जरुरत बन चुकी है | तलाक की बढती संख्या का असर हमारे परिवारों और समाज की बुनियाद पर पड़ने लगा है | समाजजनों की सहमती से मैंने इस सन्दर्भ में एक उपाय प्रस्तुत किया है जिसकी शुरुआत जैन समाज से की गयी है | हमारे समाज में माता-पिता की युवाओं की शादी के लिय रिश्ते खोजते और पसंद करते रहे हैं | मेरे अनुसार युवक-युवतियों को अपने लिए योग्य जीवनसाथी अपने ही समाज में से चुनने का अधिकार देकर हम बड़ों को मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए | अपने अनुभव के आधार पर हम उनकी मदद कर सकते हैं |

चार वर्ष पूर्व, बीजेएस के ही राष्ट्रीय अधिवेशन में मैं ने कहा था की आगामी १५ वर्षों में समाज में हर दूसरा विवाह तलाक की वजह से टूटेगा | ऐसा कहते हुए मुझे काफी दुःख हो रहा था; किन्तु समाज के हित में यह कदम उठाना मेरी जिम्मेदारी है | मैं जानता था कि पारिवारिक संरचना के बारे में मेरे यह भविष्यवाणी लोगों द्वारा स्वीकृत होना काफी कठिन होगा | यह सभी बातें मैंने अपने ३० वर्षों के अनुभव के आधार पर ही प्रस्तुत की थी |

जैन समुदाय समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है | यह समाज परम्पराओं को मानते हुए पारिवारिक संस्था में विश्वास रखता है | किन्तु आज के समय में जब विवाह असफल हो रहे हैं और परिवार बिखर रहे हैं, तो अन्य समाजों की तरह जैन समाज में भी यह संकट गहरा रहा है |

एक समय था जब हमारे समुदाय में तलाक शब्द भी दुर्लभ था | किन्तु आज की स्थिति गंभीर है | मैंने ऐसे दुखद उदहारण देखे हैं जहाँ २-३ बच्चे होते हुए भी माता-पिता में तलाक हुआ है | सगाईयां टूट रही हैं और शादी के २४ घंटे के अन्दर ही तलाक भी हो रहे है | पिछले कुछ वर्षों में मैंने इन सभी घटनाओं को बढ़ते हुए देखा है | यदि ऐसे ही चलता रहा तो समाज का अस्तित्व की संकट में आ जाएगा |

मैंने प्रथम सामूहिक विवाह २५ मई, १९८६ को आयोजित किया था जिसमे जैन समाज के २५ युगल विवाह सूत्र में बंधे | उस समय पर यह पहल करना एक कठिन और गंभीर विषय था | हमने पूरे महाराष्ट्र में पदयात्रा भी आयोजित की थी और अनेक घरों, दुकानों और प्रतिष्ठानों में जाकर जानकारी हासिल की थी | इस कार्यक्रम के आयोजन के पीछे एक ही उद्देश्य था की लड़की के माता-पिता पर पड़ने वाले दहेज़ के बोझ को कुछ कम कर सकें |

इस कार्यक्रम के माध्यम से हम जनहित में कार्य करना चाहते थे, फिर भी कई बार लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा | समय के साथ अन्य समाज के लोगों और महाराष्ट्र के अलावा अन्य राज्यों में भी सामूहिक विवाह के कार्यक्रम आयोजित होने लगे | हमारा मुख्य उद्देश्य जो कि लड़की के परिवार पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ को कम करना था; उसे समाज में मान्यता मिली और सामूहिक विवाह में पहले से अधिक लोग शामिल होने लगे | फिर भी जैन समाज में इस कार्यक्रम को सीमित सफलता ही प्राप्त हो पाई है | विभिन्न समस्याओं और कठिन परिस्थितियों के बावजूद हमारे प्रयासों में कभी कमी नहीं आई|

सामूहिक विवाह के पश्चात हमने सन १९८६ में परिचय सम्मलेन का आयोजन भी प्रारंभ किया | परिचय सम्मलेन के प्रारूप में आवश्यक परिवर्तन होते रहे और समाज में इससे अच्छे परिणाम भी प्राप्त हुए | समाज के अस्तित्व को लेकर मेरी हर चिंता और भय मेरे अनुभवों पर आधारित है |

पारंपरिक रूप से परिवार के बुजुर्ग रिश्तेदारों, मित्रों और अन्य लोगों के माध्यम से उचित विवाह प्रस्ताव खोजते हैं | इसके बाद वे लड़के के परिवार से संपर्क करते हैं और मीटिंग तय होती है | इस दौरान लड़के और लड़की की भावनाओं को अधिक महत्व नहीं दिया जाता है | उनकी पसंद और अपेक्षाओं एके बारे में जानने की ज्यादा कोशिश नहीं की जाती है | परिवार के बुजुर्ग लड़के की आर्थिक स्थिति, उसके परिवार की समाज में पहचान और रुतबे को ज्यादा महत्व देते हैं |

माता-पिता कुछ तय मापदंडों के अनुसार ही विवाह तय करते हैं | नई और पुरानी पीढ़ी में विचारों का मतभेद रहता है | लडकियां खुलकर अपने मन की बात कह नहीं बता पाती हैं और इस वजह से वे लड़के के परिवार को पूर्ण रूप से अपना नहीं पाती | इन्ही कारणों से शादी के बाद समस्याएँ उत्पन्न होती है और लड़की या तो गुमसुम रहती है या फिर कोई अनुचित कदम उठा लेती है |

पारंपरिक ढंग से विवाह तय करने में लड़कों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है | समाज में मान्यता है की विवाह हेतू पहल लड़की के परिवार को करनी चाहिए | इस वजह से लड़के को पहले तो उचित प्रस्ताव आने के लिए और बाद में अपने परिवार के फैसले के लिए बहुत इंतज़ार करना पड़ता है |

जैन समुदाय के साथ ही अन्य समाजों में भी एक और समस्या उठ रही है | आजकल लड़कियां उच्च शिक्षित हो रही हैं और जॉब में कई तरह के फैसले परिपक्वता के साथ लेती है | वे हर तरह से सक्षम होने पर भी लड़के के परिवार से मिलते समय असहज महसूस करती है | यदि लड़के का परिवार उसे नापसंद करता है तो वह मानसिक दबाव में आ जाती है । यह प्रक्रिया आज की उच्चशिक्षित युवतियों को मंजूर नहीं होती है | ऐसी स्थिति ही ना आये इसके लिए मैंने सर्वसम्मति से विवाह प्रक्रिया में बदलाव हेतू प्रस्ताव प्रस्तुत किया है |

बीजेएस के राष्ट्रीय अधिवेशन में जब मैंने अपना सुझाव प्रस्तुत किया तो वहां उपस्थित लोगों ने इसे मान्य किया और इसे एसएमएस वोटिंग द्वारा ९६.२% वोटों से पारित भी किया | परिवार के बड़े बुजुर्ग अपने बच्चों के लिए रिश्ता तय करते समय उनके सुखी भविष्य की कामना करते और सदा उनका भला ही चाहते हैं | समय और युग परिवर्तन के साथ युवाओं की अपेक्षाएं बदल गयी है | उच्च शिक्षा प्राप्त करके जॉब और व्यवसाय में सफल होने के पश्चात उनका जीवन के प्रति नजरिया बदलता है | आज के युवाओं के मन में अपने जीवनसाथी की एक स्पष्ट छवि होती है | यह पसंद यदि बड़ों की पसंद से मेल नहीं खाती तो युवा अनिच्छा जाहिर करते हैं | दोनों पीढ़ियों में टकराव की स्थिति उत्पन्न होने से परिवार की शान्ति भंग होती है |

आज के चुनौतीपूर्ण माहौल में परिवार को बनाये रखने और विवाह की सफलता सुनिश्चित करने के लिए विवाह तय करने के तरीके में बदलाव अनिवार्य हैं | युवा पीढ़ी समझदार और स्मार्ट है | पालकों को बच्चों पर भरोसा करके उन्हें विवाह प्रस्ताव चुनने का अधिकार देना चाहिए और अपने अनुभव से मार्गदर्शन भी देना चाहिए | इस उपाय से बड़े पैमाने पर वैवाहिक समस्याओं को दूर किया जा सकता है | जीवनसाथी के चुनाव में अपनी पसंद शामिल होने से युवा शादी के बाद आवश्यक तालमेल स्थापित करेंगे | वे समझेंगे की इस विवाह को सफल बनाना अब उनकी जिम्मेदारी है | युवाओं को थोड़े अधिकार सौपने से यह समस्या हल हो सकती है | घर के बड़े भी तो बच्चो की ख़ुशी ही चाहते है |

हमने यह उपाय जैन समाज में लागू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है | बीजेएस के कार्यकर्ता और अधिकारी भी इस सुझाव से सहमत हैं | अब हम पुरे समाज में उचित तरीके से इसका प्रचार प्रसार करेंगे और हमारी अगली पीढ़ी की खुशियों को अवश्य सुनिश्चित करेंगे | बच्चो की ख़ुशी से ज्यादा हम बड़ों को और क्या चाहिए ?